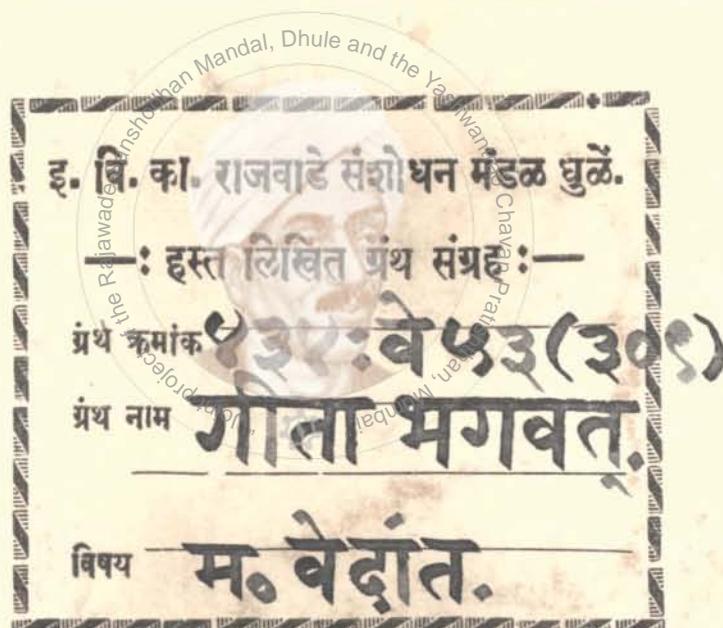


ग्रा. ३९

८३८७:८२



NRITI वेदांत

प्रबोधनं द्विकाटीक

मराठी

भावद्यूत गोपनियकारी



१८८५

(१) अथश्रीमगवडीताटिकामुक्तार्थचतुष्यप्रथमोद्यायप्रारंभः



(2)

संगीतिक
॥१॥

॥ श्रीगणेशायनमः ॥ धर्मस्तेत्रकुरुत्सेत्रां ॥ मिळालेयुत्पक्षा मुक ॥ मास्तेआणिपंडवे ॥ संजयावर्तलेकसे ॥ १ ॥ अस्यवा
 मनकविः दोहरा ॥ धर्मस्तेत्रकुरुत्सेत्रमोमिले जुत्थकेसाज ॥ संजयमो सुतपांडवेने कीन्होकेसेकाज ॥ १ ॥ वोविमुक्तेश्वर ॥
 धृतराष्ट्रम्भणेसंजय ॥ धर्मस्तेत्रकुरुत्सेत्रगया ॥ कौरवपांडवमिळोनियां ॥ तेथेंकायकरिताति ॥ १ ॥ पदबोधिनीटिका ॥
 हेसंजय ॥ अगासंजय ॥ धर्मस्तेत्र ॥ धर्मरूपस्तेत्रदेवो ॥ मुक्तेत्रावेगयां ॥ समवेताः ॥ मिळालेदेसे ॥ युयुत्स
 वः ॥ युद्धश्वावंतरेसे ॥ मामकाः ॥ आमचेतुर्योधनादिकजेते ॥ पांडवाश्रैवापांडवजेतेही ॥ किमकुर्वत ॥ कायकरितेजाले ॥ १ ॥
 आयग ॥ धर्महेत्तिरुस्त्व्याहेत्तिमिठूनोकरावयासमर ॥ मास्तेआणिपांडुचेकरितीतेसांगसंजयाकुमरण ॥ १ ॥
 ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ धर्मस्तेत्रकुरुत्सेत्रसमवेतायुयुत्सवः ॥ मामकाः पांडवाश्रैवकिमकुर्वतसंजय ॥ १ ॥
 ॥ संजयउवाच ॥ दद्वातुपांडवानीकं वृद्धं तुर्योधनस्तदा ॥ आचार्यमुपसंगम्य राजावनमत्रवीत ॥ २ ॥
 ॥ श्लोक ॥ रवलेपांडवदक्षतें ॥ तें तुर्योधनदेखुनि ॥ राजावननहेबोले ॥ द्वोणाजवक्षयेउनि ॥ २ ॥ दोहरा ॥ पांडवसेना
 व्युहलद्वितुर्योधनद्विगआय ॥ निजआचार्यद्वोणसोंबोल्यो ऐसोंभाय ॥ २ ॥ वोविः ॥ संजयम्भणेरायाश्चिः ॥ पांडवसेन्यप
 येश्चिः ॥ राजासांगेद्वोणपाश्चिंतयाजवक्षयेउनियां ॥ २ ॥ पद०यिका ॥ राजातुर्योधनः ॥ राजातुर्योधनजोतो ॥ तदातेका
 क्ली ॥ वृद्धं ॥ वृहकरूपरचिलें ऐसें ॥ पांडवानीकं ॥ पांडवसेन्यजेंल्यातें ॥ दद्वातुदेखोनतरि ॥ आचार्य ॥ द्वोणाचार्यातें ॥
 उपसंगम्य ॥ यासमीपजाऊनावननं ॥ वक्ष्यमाणवचनातें ॥ अब्रवीत् ॥ बोलताजाहला ॥ २ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 आयो ॥ तेकापंडुसताचीपाकुनसव्यहसेन्यरचनाते ॥ वेगीद्वोणाजवक्षयेउनिबोलेनृपाक्षयचनाते ॥ ३ ॥

ओ ॥ १ ॥

॥ १ ॥

(2A)

॥श्लोक॥ पाहें हेपांडवीसेना॥ आचार्याधोरजेब झुतु स्याच शिष्यें रविलि॥ शाहण्यादुपदात्मजे॥ ३॥ दोहरा नुलसीदास
 पांडवसेना अतिबडि॥ आचार्यतूंदेखव॥ धृष्टद्युम्नतव शिष्यनेव्युक्तरवो विशेषव॥ ३॥ वोविमु० आचार्यापांडवसेन्यपाहें
 दुपदपुत्रेवनाकेलीहे हातुम्भाशिष्यहोय। बुधिवक्लें आधिकु॥ ३॥ पद०टिका॥ आचार्या॥ अगाडोणाचार्या॥ तवशि
 ष्येण। तुम्भाशिष्यऐसा॥ धीमता॥ बुधिवंतएसा॥ दुपदपुत्रेण॥ दुपदाचापुत्रधृष्टद्युम्नज्ञातेण॥ व्यदां॥ व्यहरवनें रविली
 ऐशि॥ पांडुपुत्राणां॥ पांडुपुत्रधर्मादिकजेत्यांवा॥ महती॥ थोरऐशी॥ एतां चमूं हेसेनाजेतीतें पश्य पाहें॥ ३॥ आर्या॥ हे
 आचार्यो स्वामीपांडुवसेनापाहावया ज्ञाने॥ धृष्टद्युम्नव्यहारविलेज्ञाप्येतुस्याचस्तज्ञाने॥ ३॥ " "

॥पश्येतां पांडुपुत्राणामाचार्यमहतीचमूं॥ व्यदां दुपदपुत्रेण तवशिष्येण धीमता॥ ३॥
 ॥ अत्रश्रूरामहेद्यासामीमार्जुनसमाधियुयुधानोविराटश्च दुपदश्च महारथः॥ ४॥

॥श्लोकवा०॥ येथें मीमार्जुनानुल्य॥ शूरथोरधनुधरयुयुधानव्यमहारथ॥ ४॥ दो॥ शूरधनुरवधा
 रीबडे अर्जुनमीमसमान। ईपदमहारथि औरपुनी है विराटयुयुधान॥ ४॥ वोविमु० पांडवसेनेतवीरजाण। युधिक
 रणारभीमार्जुन। यांसमविराटयुयुधान। दुपदाएसेमहारथि॥ ४॥ पद०टिका॥ अत्रयुधि॥ यायुध्याचागांी॥ मीमा
 र्जुनसमा॥ प्रसिद्धमीमार्जुनजेत्यांवेसमान असे। महेद्यासा थोरआहेत धनुष्यें ज्यांवातेएसे॥ शूर॥ शूरआहेतको
 णतरी॥ युयुधानः॥ सात्यकीजोतो॥ विराटश्च॥ विराटजोतो॥ महारथः॥ महारथीऐसा॥ दुपदश्च॥ दुपदजोतोही॥ ५॥
 आर्या॥ मीमार्जुनसमयेथेदिसतीधन्वीसमग्रहरथी॥ सात्यकिविराटआणिकेदुपदादिकहेमहारथातिरथी॥ ५॥

(3)

मंगी-टि-व-

॥२॥

आ-
१॥

॥४॥ धृष्टके तुव कितान काशीराज पराक्रमी। पुरुजि लुंति भोज राज्य द्वै बाख्य पुरुष वर्ष सा॥ ५॥ होहरा॥ धृष्ट
 के तुओ रुकाशि पति च कितान बल वंत॥ कोंति भोज और द्वै ब्य पुनि पुरुजि तरानु निकंत॥ ६॥ वो विमु॥ धृष्ट के तु
 श्र कितानु। काशीराज वीर्य वानु। पुरुजि तरानि तीक्ष्ण। कोंति द्वै ब्य न राधिय॥ ७॥ पद०टिका॥ धृष्ट के तु॥ धृष्ट के तु ल
 णोन। चे कितान याना भावा। वीर्य वान्। पराक्रमी रेसा। काशीराज श्रा। काशीराज तोही। पुरुजि तरा॥ पुरु
 जि तरा नामें प्रसिद्ध। कुंति भोज श्रा। कुंति भोज तोही। नरपुंगव॥ ८॥ मनुष्य श्रे ष्ठ रेसा। द्वै ब्य श्रा। द्वै ब्य ही॥ ९॥ आर्य
 तोधृष्ट के तु आहे काशी वर आणि चे कितान असे॥ इस तो वीरपहारे पुरुजि तस हौ द्वै ब्य कुंति भोज असे॥ १०॥ ॥ ॥ ॥

॥१॥ धृष्ट के तु श्रे कितानः। काशीराज श्रा वीर्य वान्॥ १॥ पुरुजि लुंति भोज श्रा द्वै ब्य श्रा नरपुंगव॥ २॥
 ॥२॥ सुधामन्यु श्रा विक्रांत उत्तमोजा श्रा वीर्य वान्॥ सौभद्र द्वै पदे या श्रा सर्व एव महारथाः॥ ३॥

॥३॥ श्लोकवा॥ महावीर सुधामन्यु। उत्तमोजा पशके नी। अक्षिमन्यु दुपदाचे॥ पुत्र सर्व महारथी॥ ४॥ होहरा॥ सु
 धामन्यु और विक्रमी उत्तमोजा रणधिर। दुपदस्त अक्षिमन्यु यह महारथी बल बीर॥ ५॥ वो विमु। सुधामन्यु परा
 क्रमी बहुत। उत्तमोजा वीर्य वंत सुभद्रे या आणि दुपदाचे सुत। है सर्व ही महारथी॥ ६॥ पद०टिका। विक्रांत। प्रख्यात ऐ
 सा। सुधामन्यु श्रा। सुधामन्यु जो तोही। वीर्य वान्। पराक्रमी। उत्तमोजा श्रा। उत्तमोजा तोही। सौभद्र। सुभद्र द्वा वाळ अक्षि
 मन्यु जो तोही। द्वै पदे या श्रा। द्वै पदे या चे पुत्र प्रति वंधा दिक्। पांच तोही। सर्व एव है सर्व ही। महारथाः। ये क्ये कहां है सहस्रांशी। युत्थ करणा रऐसे॥ ७॥
 आय॥। उत्तमोजा विक्रम ग्राढी तसा सुधामन्यु॥। सर्व ही महारथी तै पांच बीचे कुमार अक्षिमन्यु॥ ८॥ ॥ ॥

(3A)

॥ प्रेक्षक वा ॥ आम चे थोर जे त्यांते ॥ आ इके ब्राह्मणो न मा सैन्या चे वधनी मास्या ॥ त्यांते संज्ञार्थ सांगतो ॥ ७ ॥
दोहरा ॥ मोसे ना मोजो बउ सब गिनिये दिज राजा ना के जानत तु मति ने पुरे जुझ के काज ॥ ७ ॥ वो वि ॥ आस्ता म
ध्यें जे श्रेष्ठा तेतूं औक गा दिज श्रेष्ठा मान्निया सैन्यांत सुभादा ते नुजलांगी सांगतो ॥ ७ ॥ पद ० टिका हे दिजो न मा ॥
अगांडोणा वार्या ॥ अस्मा कंतु आमुं चेतरी ॥ ये दिशिष्ठा ॥ जे थोर तान् त्यांते ॥ निबोध जाण मम सैन्यस्या मास्या ॥
सैन्या चे नायका ॥ निर्वहणा रहे से जे ॥ संज्ञार्थी बरें जाणाया कारण ॥ ते तृज तान् त्यांते ॥ ब्रवी मि सांगतो ॥ ७ ॥ आ०
एकावे दिज बयनियक मास्या विद्वां सैन्याते ॥ संज्ञार्थच मीवहतो जाण्य बे लोक मान्य मान्याने ॥ ७ ॥ " " "

॥ अस्मा कंतु विद्विष्ठा येता निबोध दिजो न मा नायका मम सैन्यस्य संज्ञार्थ तान् ब्रवी मि ते ॥ ८ ॥
॥ भवान्नीष्मश्च कर्णश्च लपश्च समितिं जयः ॥ अश्वथामा विकर्णश्च सोमरजि स्तथैव च ॥ ८ ॥

॥ प्रेक्षक वा ॥ तृंभाष्म आणि रिकर्ण ॥ हृपजो दिजचीरण ॥ अश्वथामा विकर्णरव्य ॥ तोहि भूरिश्रवात सा ॥ ८ ॥
दो ॥ तृं मओरुभीरव मकरण हृपजि अजित संग्राम ॥ मुरि श्रवा विकरण ओर अश्वथामा नाम ॥ ८ ॥ वो वि ॥ तृं
आणि भीष्म कर्ण ॥ हृप चार्या ना तिसंपूर्ण ॥ अश्वथामा विकर्ण ॥ तोमदति असे हे ॥ ८ ॥ पद ० टिका ॥ भवान् द्वेणा चार्य
जो तुं भीष्मश्च भीष्माचार्या ही ॥ कर्णश्च कर्ण जो तो ही ॥ हृपश्च हृप चार्या ही ॥ अश्वथाम द्वेण पुत्र अश्वथाम ऐसा विकर्ण
श्च ॥ विकर्ण जो तो ही ॥ तथैव च ॥ तसा च ॥ समितिं जय ॥ मुझ जिं किणा रहे सा ॥ सोमदति ॥ सोमदता चापुत्र भूरिश्रवा जो तो ॥ ८ ॥
आय ॥ एकतुहली अणि भीष्म ब्रोद हृप चार्य आणि हार्ण ॥ तो सो मदति आणि अश्वथाम गुणा करविकर्ण ॥ ८ ॥ " "

मंगी टिंच

३

(६७)

॥ श्लोक वा ॥ आणिक ही बङ्ग सर्थ मरणा रजे नानाश स्त्रें हण नारे ॥ युत्थी कुशल सर्व ही ॥ १० ॥ देहरा ॥
ओर बङ्ग त शर हैं माल गत जु प्राण ॥ सांत भांत आयु धल एस बजु थे को बल वान् ॥ ११ ॥ वो वि ॥ आणिक ही बङ्ग
त वीरा ॥ मास्या नि मिल्ये मरणा रा नानाश स्त्राचे प्रेरणा रा ॥ स कळ कुशल युत्था शि ॥ १२ ॥ पद ॥ टिका ॥ अन्ये च ॥ आ
णी कही ॥ शूरः शूर जे ते बहवः ॥ बङ्ग हृत मर्थे ॥ मास्या प्रयोजनी ॥ यक्त जी विता ॥ प्राण त्यागी निश्चय वंत ऐ से
सर्वे ॥ सर्व ही ॥ नानाश स्त्र प्रहरणा ॥ नाना प्रकार इंचे शत्रें हणा या चौ साधने ज्यां पारां ते ऐ से ॥ युत्थ विशारदा ॥
आणिक शस्त्रो स्त्री हेजहृत जरुर निउण समराया ॥ मास्या अश्लिली धर्म नी आलै हिमान समराया ॥ १३ ॥ युत्थी निषूण ऐ से ॥ १४ ॥

आ ॥ १ ॥

॥ अन्ये च बहवः शूर मर्थे यक्त जी विता ॥ नानाश स्त्र प्रहरणा ॥ सर्वे युत्थ विशारदा ॥ १५ ॥
॥ अपर्याप्तं तदस्माकं बलं भीष्मा भिरस्ति ॥ पर्याप्तं त्विदमेतेषां बलं भीष्मा भिरस्ति ॥ १० ॥

॥ श्लोक वा ॥ अस मर्थत यां चेंते ॥ स मर्थ बळ आमुचे ॥ जे सन्त्यर चिले भी ओं ॥ या चेंतो भी मरस्ति ॥ १० ॥ हो ॥
मो से नास मरथसि ॥ भीख मराख तता द्विपर से ना अस मरथ हैरा खत भी मसु बाहो ॥ ११ ॥ वो वि ॥ आम ची मे
ना असे गा द्विभी भरस्ति ताहे ओ द्वियां चौ से नाबळ हिनथो द्विभी मराखे बळा ने ॥ १० ॥ पद ॥ टिका ॥ त
द्र ते ॥ भीष्मा भिरस्ति ॥ भी ओं रहिले ऐ से ॥ अस्माकं बलं ॥ आम चेंबळ जेंते ॥ अपर्याप्तं थोडे द्विस्ते ॥ इहं तु
हेंतरी ॥ भीष्मा भिरस्ति ॥ भी मेरस्ति ले ऐ से ॥ एतेषां बलं ॥ यां पांडवां चेंबळ जेंते ॥ पर्याप्तं ॥ स मर्थ ले से द्विस्ते ॥ १० ॥
जाया ॥ द्विस्ती अपूर्ण अमुची भीष्मे रह्यो नि भी मसे नाही ॥ पूर्ण एसे पार्थ ची अनु सरता जाण भी मसे नाही ॥ १० ॥ ॥

॥ ३ ॥

(4A)

॥ श्लोक वा ० ॥ तथा विसैन्यरक्षेविं ॥ स्थानें जिंत्यां सदिधालिं ॥ भी आतें चितुल्लिरक्षा ॥ सर्वंतें ते स्त्रङ्गी
द्वनि ॥ ११ ॥ दोहरा ॥ आसपासमोच्छके दुमसब प्रगटहोह ॥ सीरवमकीर छाकरोधरिके मनमोकोह ॥ ११ ॥ वे
विमु० ॥ ठाइंगइंरणभूमीसि ॥ जतनकरावें भी आसि ॥ तोतुल्लासमस्तांसि ॥ रक्षिलजाणाप्रतापें ॥ ११ ॥ पद०
टिका ॥ सर्वेषु च अयनेषु ॥ सर्वव्यूह प्रवेरामार्गावेषायं ॥ सवंतः सर्वएव ॥ तुलीसर्वही ॥ हि निश्चयें यथाजागं ।
आपापल्यारणभूमीतें नटां कितां ॥ अवस्थिताः ॥ राहिले होताते ॥ भी आमेव ॥ भी आवार्यजोत्यातें च ॥ अपि
रक्षन्तु ॥ संरक्षणकरा ॥ ११ ॥ आव ॥ अपुल्याअपुल्यास्तानी ॥ तष्ठतियुद्धीधरोनिहठलक्षा ॥ अवधेमिछोनिएकाभीष्मालागी

॥ अयनेषु च सर्वेषु यथा भागमवस्थिताः ॥ भी आमेवाभिरक्षन्तु सवंतः सर्वएवहि ॥ ११ ॥
॥ तस्य संजनयन्हर्वं कुरु टुदः ॥ विनामहः ॥ सिंहनादं विनयो चैः शंखं रध्मौ प्रतापवान् ॥ १२ ॥

जपोनिसंरक्षा ॥ ११

॥ श्लोक वा ० ॥ तो उर्योधनसंतोषे ॥ ऐसा भी आवितामह ॥ गर्जानिसिंहनादातें ॥ प्रतापिशंखवाजवी ॥ १२ दो ॥ उर्यो
धनके हर्वकों ॥ भी खमजिवित चाहि ॥ सिंहनादउच्चैकियो दुः सहसंखवजाय ॥ १२ ॥ दोवि ॥ वडिलभी आ प्रतापिया ॥ दु
र्योधनाहर्षउपजावया ॥ सिंहनादकरुनियां ॥ प्रतापेशंखवाजवि ॥ १२ ॥ पद० टिका ॥ तस्य त्यादुर्योधनास ॥ हर्वं संतोषा
तें ॥ संजनयन् ॥ उपजवित होताता ॥ कुरु टुदः ॥ कौरवांचावडील असा ॥ प्रतापवान् ॥ पराक्रमीऐसा ॥ विनामहः ॥ आजा
भी आवार्यजोतो ॥ उच्चैः ॥ मौद्यानें ॥ सिंहनादं ॥ सिंहगर्जनातातें ॥ विनयकरुन् ॥ शंखं ॥ शंखजोत्यातें ॥ ध्मौ ॥ वाजवितजाला ॥ १२ ॥
आय ॥ ऐकुनियान्हपवचनात्यासिकरायातयोग्रभोदतो ॥ गर्जानिसिंहनादेकरितो कुरु वृक्षद्रांखवनादातो ॥ १२ ॥ ॥

म-ग-ह-व-

॥ श्लोक ॥ तो वायें रांख केर्मा दि ॥ पण वान क गो मुख वे ॥ वाज विलं येक सरे ॥ जाला तो धनि तुं बळ ॥ १३ ॥ हो ० ॥ तवें रांख
 केरी पण वान क गो मुख भरि ॥ तासे छिन बाज तभये शद् रह्यो भरी पूर ॥ १४ ॥ वो वि मु ॥ मग शंख आणि केरी ॥ पा
 ण वान के घे उनि करि ॥ अवधीं गर्ज लिं येक सरि ॥ थोरना दजा हला ॥ १५ ॥ पद० टिका ॥ ततः खानंतर ॥ रांख आ ॥ रांख जे
 ते ही ॥ भेरी ज्याला ही ॥ पण वान क गो मुख वा ॥ दमा मे का हले इल्यादि वाद्य विरोध जे ते ॥ सहस्रे व ॥ ये काये कंव ।
 अप्य हन्यंत ॥ वाज ते जा हले ॥ सज्जा वृ ॥ तो शद् जो सो ॥ तु मुल अभवत ॥ मोटा होता जा हला ॥ १६ ॥ आथा ॥ मग शंख सह भे
 री पण वान क गो मुख वादि रवं हाटे ॥ जे ठोड़ा देक सुनीष्य वीआकाशा सरकों हाटे ॥ १७ ॥ " " "

आधा १

॥ ततः रांख आ भेरी श्व पण वान क गो मुख वा ॥ सहस्रा पर्याहन्यंत स शद् सुमुलो भवत ॥ १८ ॥
 ॥ ततः श्वेते हृष्ये शुक्रे महति स्यं द्वे स्थितौ ॥ माधवः पांडव श्रैव दिव्यो शंखो प्रदध्मतुः ॥ १९ ॥

॥ श्लोक ॥ वा ० ॥ तो थो ररथ शुक्रा श्वी ॥ युक्त ऐ क्यारथ्या तया ॥ दिव्य वाज विते जाले ॥ रांख मा धव पांडव ॥ १४ ॥ हो ० ॥ सेत
 बरन घोरे लगे महारथ हिबनाय ॥ हरि अर्जुन ता परवठे रहे शंख वजाय ॥ १५ ॥ वो वि ॥ श्वेत घोडे महारथी ॥ वरिपांड
 व आपति ॥ दिव्य शंख घे उनि हाती ॥ वाज विते जा हले ॥ १६ ॥ पद० टिका ॥ ततः मग श्वेते ॥ शुक्र ऐ से हृष्ये ॥ अश्व जे ते
 ही करून ॥ शुक्रे युक्त ऐ से महनि थोरे से स्यं द्वे ॥ रथा च्यागया ॥ स्थितौ राहिले ऐ से माधवः ॥ लहमो कांत जो तो ॥ पां
 उव श्रैव ॥ अर्जुन जो तो हा ॥ दिव्यो शंखो ॥ देव लोकां चे शंख ऐ से जेत्यांते ॥ प्रदध्मतुः ॥ वाज विते जा हले ॥ १४ ॥ आथा ॥
 वै सनिते श्रेष्ठ रथी संयुक्ते श्वेत वर्ण हयजासी ॥ माधव आणि कपांड व वाज विती तो चिदिव्य जलजासी ॥ १५ ॥ " "

॥ ४ ॥

(58)

म

॥श्लोक वा ॥ हृषीकेशं पांचजन्यं देवदत्ते धनं जयेण ॥ पौं दुनामहाशंखं भीमें बलें वाजविला ॥ १४ ॥ दो० ॥ देव
दत्त अर्जुनलयोपांचजन्यं जदुराया ॥ सीमभयानकं भयदियोपौं दुशंखवज्ञाय ॥ १५ ॥ वेवि ॥ पांचजन्यं धेनला
ल द्येण ॥ देवदत्ततो वारें अर्जुनें ॥ सीमद्वको दरतेणें ॥ पौं दुशंखवज्ञाविला ॥ १५ ॥ पद० इका ॥ हृषीकेशः ॥ विषयें दिय
स्वामीजोतो ॥ पांचजन्यं ॥ पांचजन्यया नामाचाशंखजो ख्यातिं ॥ दध्मो ॥ वाजविता जाहला ॥ भीमकर्मा ॥ भयं करकर्म
ज्यादें ऐसा ॥ द्वको दरः ॥ भीमसेनजोतो ॥ पौं दुशंपौं दुयाना माचाशंखं भीमद्याशंखवालें ॥ दध्मो ॥ वाजविता जाहला ॥ १५ ॥
आर्या ॥ बाभत्सुहेवदत्तावाजवितो हृषीकेशं पांचजन्यात्मि ॥ वाजविलेपौं द्वासी भीमेजोनित्यसिद्धयुधासी ॥ १५ ॥ " "

॥ पांचजन्यं हृषीकेशो देवदत्ते धनं जयः ॥ पौं दुश्मो महाशंखं भीमकर्मा द्वको दरः ॥ १५ ॥
॥ अनंतविजयं राजाकुंतीपुत्रो युधिष्ठिरः नकुलः सहदेव असुधोषमणिपुष्पकौ ॥ १६ ॥

॥ श्लोक ॥ राजा अनंतविजयं शंखवालें श्रीयुधिष्ठिरः मादिपुत्रो वाजविले ॥ सुधोषमणिपुष्पक ॥ १६ ॥ दो० ॥ नपति
युधिष्ठिर कुंकियो अनंतविजयको धोष ॥ मुनिसहदेवनकुलनेमणिपुष्पकको धोरव ॥ १६ ॥ वेवि ॥ अनंतविजय
गजरें वाजविलायुधिष्ठिरें नकुलसहदेववारें ॥ मणिपुष्पकवाजविले ॥ १६ ॥ पद० इका ॥ कुंतीपुत्रः ॥ कुंतीचातनये
साराजायुधिष्ठिरः ॥ राजाधर्मजोतो ॥ अनंतविजयं ॥ अनंतविजययानामाचाशंखजोत्यालें वाजविता जाला ॥ नकुलः ॥
नकुलजोतो ॥ सहदेव श्वासहदेवजोतो ही ॥ सुधोषमणिपुष्पकौ ॥ सुधोषमणिपुष्पयानामाचेशंखजेत्यालें वाजवितेजाले
आय ॥ राजा अनंतविजयावाजवितेजाले ॥ राजा अनंतविजयावाजवितेजाले ॥ सहदेवनकुलतैसेवाजाविमणिपुष्पकाजिधसुधोषाः ॥ १६ ॥ ॥ १६ ॥

(6)

न.गी.टि.वे

५

॥ श्लोकवाऽधनुर्धरमहाकाश्य ॥ शिखंडीहिमहारथा ॥ अजिंक्यसात्यकीवारा ॥ धृष्टद्युम्नविराटहि ॥ १७ ॥ होहरा
 महांधनुकधरकाशिपतिरथि शिखंडीजाण ॥ धृष्टद्युम्नविराट अतिक्वीसात्यकिहिमान ॥ १७ ॥ वोवि ॥ काशिरा
 जधनुर्धरा ॥ शिखंडीमहारथिवीरा ॥ धृष्टद्युम्नविराटथोरा ॥ सात्यकीअपराजित ॥ १७ ॥ प८०टिका ॥ परमेष्ठासः ॥ मो
 हाधनुर्धरीअसा ॥ काशिराजजोतोही ॥ महारथः ॥ महारथीऐसा ॥ शिखंडीच ॥ शिखंडीजोतोही ॥ धृष्टद्यु
 म्नः ॥ धृष्टद्युम्नजोतो ॥ विराटः ॥ विराटजोतोही ॥ अपराजितः ॥ पराजयनाहीऐसा ॥ सात्यकिश्च ॥ सात्यकीनामेयादवजो
 आर्याणिकाशयोशिखंडिनेहीत्याकेलाष्टवहरजरराने ॥ सात्यकीनीरेआणिकधृष्टद्युम्नविराटवीराने ॥ १७ ॥ तोही ॥ १७ ॥

आ १

॥ काश्यश्च परमेष्ठासः ॥ शिखंडीचमहारथः ॥ धृष्टद्युम्नविराटश्च सात्यकिश्च अपराजितः ॥ १७ ॥
 ॥ दुपदौपदेयाश्च सर्वत्राः ॥ एथिवीपते ॥ सोभद्रश्च महाबाङ्गः ॥ शंखां रथमुः ॥ एथकृष्टकृ ॥ १८ ॥

॥ श्लोक ॥ दुपदौपदीपुत्र ॥ अभिमन्यमहापुजा ॥ शंखवाजविलेपाहिं ॥ आपलालेष्ठकृष्टकृ ॥ १८ ॥ हो० ॥ दुप
 दौपदीपदीसत्सवेऔर सुभद्राप्त ॥ आपने अपने शंखलधनिकिनितासुन ॥ १८ ॥ वोवि ॥ दुपदआणिदौपदी
 सुन ॥ सुभद्राप्तविरव्यात ॥ हेमिळोनिसमस्तवेगक्लालेशंखवाजविले ॥ १८ ॥ प८०टिका ॥ हेष्ठिवीपते ॥ अगा
 धतराष्ट्राराजया ॥ दुपदः ॥ दुपदराजाजोतो ॥ दौपदेयाश्च ॥ दौपदीचेपुत्रतेहीमहाबाङ्गः ॥ मोहापराक्रमीअसा ॥ सोभद्र
 श्च ॥ अभिमन्युजोतोही ॥ सर्वेशः ॥ सर्वही ॥ एष्ठकृष्टकृवेगलेवेगले ॥ शंखान् ॥ शंखजेत्यांते ॥ रथमुः ॥ वाजवितेजाहले ॥ १८ ॥ ॥
 आ० ॥ दुपदेअभिमन्यूनेष्ठकृष्टकृदौपदीजतनुजानी ॥ वाजवुनीशंखतेभरिलीदाहीदिगंतरेजानी ॥ १८ ॥

॥ १८ ॥

(6A)

॥श्लोक॥ तोधोषधार्तराष्ट्रांचा॥ हृदयातेंवि दारुनी॥ आकाशाणिभूमीतें॥ महातुंबळगर्जेवी॥ १९॥ दो०॥ फुट्यो
हियो कौरवनकोशहृसुन्योताबार॥ पथ्यो औरुआकाशमोपुरिह्योगुंजार॥ २१॥ वोवि॥ तयानाहाचेनिगजरी॥ डु
मडुमिलीपातकशिरवरें॥ दुर्योधनासिद्धुःखानक्षरें॥ हृदयफुटतखेहानें॥ २२॥ पद०टिका॥ सघोषः॥ तोशंखध
नीजोतो॥ नभ अश्व आकाशातेंहु॥ पथिवातेंहु॥ तुमुल॥ अत्यंत॥ व्यनुनादयन्॥ प्रतिध्वनीनें पूरितहो
त्साता॥ धार्तराष्ट्राणां॥ दुर्योधनारिकजेयां च्याहृदयानि॥ हृदयजेयातें॥ व्यदारयन्॥ भयउत्यजिकरिताजाला॥ २३॥
आर्या॥ त्याधार्तराष्ट्रचित्तीलाबुनितोधोषतीवधाकासी॥ इसाभातुंबळध्वनिहाभरिलाष्ट्यवीतआणिआकाशी॥ २४॥

॥ सघोषोधार्तराष्ट्राणां हृदयानि व्यदारयन्॥ नभ अश्व पथिवातेवतुमुलो व्यनुनादयन्॥ २५॥
॥ अथवस्थितान् हृद्याधार्तराष्ट्रान्कपिध्वजः॥ प्रवर्त्तेशस्त्रसंपाते धनुरुद्यम्यपांडवः॥ २०॥

॥ श्लोक वा०॥ तोधार्तराष्ट्ररवले॥ हेंदेरवोनिकपिध्वज॥ आरंभतंशस्त्रधात॥ घेउनिधनुपांडव॥ २१॥ दो०॥ देखेसुत
धृतराष्ट्रके अर्जुनधनुखसमारि॥ कपिवरजाकेध्वजबसेशस्त्रनपरतनिहार॥ २०॥ वोविमु०॥ सिद्धजालेंद्रकज्ञार॥
तेअवेश्वरीकपिध्वजवीर॥ देखेनिशस्त्रपिभार॥ धनुष्यवाहिलें॥ २१॥ पद०टिका॥ अथयानंतरा॒शस्त्रसंपाते॑
परस्परयुद्जो॥ प्रवर्त्तेप्रवर्त्तलाजसतां॥ कपिध्वजः॥ ध्वजीहनुमंतआहेज्याच्यातोऐसा॥ पांडवः॥ अर्जुनजोतो॥ धनुः॥
गाढिंवधनुजेंलातें॥ उद्यम्यवर्तेऽचलोन॥ व्यवस्थितान्॥ मुद्धार्थमिळालेऐसोधार्तराष्ट्रान्॥ एतराष्ट्रसंबंधीजेखांतेंहृद्या॥ पा
ज्ञा॥ वीरउभैः अवघेहीकरावयालागिशस्त्रसंपातो॥ पाहुनिअर्जुनितेहाहातीघेवैनिसज्जचापातो॥ २०॥ होना॥ २०॥

८०

आ-
१

॥ श्लोकवा०॥ तेकांपार्थहृषीकेशा॥ बोलिलाहे मही पति करी मास्तारथउभा यादें सैन्यांत अच्युता ॥२१॥ दो०
 अर्जुनक हिजुह ल्लसों मेरो चहि येदेचिता हो उसेनाके मास्त मोरथ डारो करो मित॥२१॥ वोवि॥ अगाराया भूमिप
 ति॥ अर्जुन बोलकेशवाप्रति हाँ सैन्यांत निगुलिं रथने इजे॥२१॥ पद०टिका॥ हे मही पते॥ अगार्ह पती॥ घृतरा
 षा॥ त हातिकाळी॥ हृषीकेशांशानें द्रिय स्वामी श्रीहृषीजो त्याते॥ इहाँ वाक्यं॥ वक्षमाणवचनाते॥ आहासांगता
 इलाहि अच्युत॥ अगार्ह अच्युतरहितानाश्वरहिता॥ मेरथ मास्तारथ जो तो॥ उपयोः सेनयोः मध्ये॥ होन्ही सैन्या
 आयगि॥ बोलेश्रीहृषीसी अर्जुन तेका करवया आजी॥ दोही सेनेमध्ये नेमास्तारथ हिजुता त्यां मध्ये स्त्रापय ठेवी॥२१॥
 आजी॥२१॥

॥ हृषीकेशांत हातवाक्यमिह मही पते॥ अर्जुन सेनयोहृषीमध्ये रथस्त्रापय मेच्युत॥२१॥
 ॥ यावदेतान्निरीक्ष्ये हंयोत्थुकामानवस्तितान् कर्मयासहयोदय मस्मिन्नणसमुद्यमे॥२२॥

॥ श्लोकवा०॥ तों किंजो यांस मीपाहे॥ जे युध्या कारणें उत्ते॥ मीषे थं कोण कोणाते॥ सगडावेरणांत या॥२२॥ दो०
 हरा॥ जबलगदे रवों हो इनेजुरेजुख के दाय॥ कोनकोन सों होयारण मे समपाय॥२२॥ वोवि मुक्ते श्वरकवी॥ मी
 पाहेन सर्वांशि॥ युत्थ उलंग कवणाशि॥ मजहाते कांरविशि॥ यारणा मध्ये केशवा॥२२॥ पद०टिका॥ अहां मी
 जोतो॥ अवस्थितान् राहिले असे॥ एतान् योत्थुकामान्॥ हेयुत्थिं इछावंत जेयांते॥ यावत् जोंवरा॥ निरीक्ष्य पाहेन
 अस्मिन्नणसमुद्यमे॥ यामुत्था चावरवा उद्योगजो याच्यागांया॥ मया म्मा कैः सहा कोणावरावरी॥ योध्यव्यं॥ युत्थकरवे॥२२॥
 आयगि॥ जोवरि अवघाह ईयुधो तकुक हाउभारिपुन्नाम॥ पाहिनविचारुनीयाकरुमीकवणास्तोनिसंग्राम॥२२॥

८

(5A)

॥ श्लोक वा ० ॥ पाहेन युध्यत्यातें जे मिळाले रणातया । दुर्बुद्धि दुर्योधनाचे ॥ इच्छिति प्रियजेरणी ॥ २३ ॥ हो ० ॥ जुत्प
करणार जो धाजिते आये हैं पासा जा दुर्बुद्धि कौरवन को भलोकरण आये काजा ॥ २४ ॥ वो वि ॥ दुर्बुद्धि कौरव पती ॥
इष्ट इच्छुं अलेति कोण कोण निरुति पाहे दृष्टि ॥ २५ ॥ पद०टिका ॥ दुर्बुद्धि असाजो धार्तराष्ट्रस्य ॥ धृतराष्ट्र
सुत दुर्योधन जोत्यास युध्ये ॥ युत्था न्याग ईं प्रियविकीर्णवः ॥ हितक्रिय इच्छावंत ऐसे ॥ परते जे हेते अत्र यारणम्
मी न्याग ईं समागताः ॥ आले आहे त ॥ तान् योद्यमानान् ॥ त्यां युध्य करणारांतें ॥ अहं मी जोतो अवेष्य ॥ पाहीन ॥ २६ ॥
आया ॥ पाहिन अवघेय थे आले युध्यसि वीर लवलाहे ॥ दुर्माति रक्षयोधनाच्या युध्यजे इच्छिति प्रियां लोहा ॥ २७ ॥

॥ यो त्यमानान वे स्येहं य एते त्र समागताः ॥ धार्तराष्ट्रस्य दुर्बुद्धि युध्यप्रियविकीर्णवः ॥ २३ ॥
॥ संजय इ० ॥ एव मुक्तो हृषीकेश गुडके शेन भारत ॥ सेन यो रक्षयो मध्ये रक्षयित्वा रथोत्तमं ॥ २४ ॥

॥ श्लोक वा ० ॥ हृषीकेश गुडके शेन ॥ प्रार्थिला जो असान्तपा तो संसैन्यामध्यभागी ॥ तो स्त्रियो निरथोत्तम ॥ २५ ॥ हो ० ॥
ए सो कहि श्री लक्ष्मसों सुनि अर्जुन किबात ॥ हो उसेनाभाज रथलै रखवो ताघात ॥ २६ ॥ वो वि मु० ॥ अगा धृतराष्ट्रराया
एसें अर्जुन बोलो नियां ॥ हृषीकेश रथने उनियां ॥ हों सैन्यात स्त्रियिला ॥ २७ ॥ पद०टिका ॥ हेभारत ॥ अगा धृतराष्ट्रराया
गुडके शेन ॥ जितनि इरे सा अर्जुन जो तेणे ॥ हृषीकेशः ॥ विषये दियस्वामी लक्ष्मजो ॥ एव मुक्ता ॥ असें बोलो नघेतलें हो
त्याता ॥ उभयोः सेन योः मध्ये ॥ हो नहीं सेन च्यामध्यभागी ॥ रथोत्तमं ॥ अग्निदन उत्तमरथजो याते ॥ रक्षयित्वा तेऊन ॥ २८ ॥
आया ॥ एकुनि इरावचना युध्यजे बोलिलायुडके शेन ॥ हो ही सेन मध्ये रक्षयीने वूनिरथ हृषीकेश ॥ २९ ॥ ॥

(8)

म-गी-टि-व

७

आ-
१

॥ श्लोक वा ॥ समोरभाष्म दोणा वा । सर्वप्र पाक्ष सन्मुखवा पर्था पाहे लग्ने यांतें ॥ मिळाले जेकुरुप्रति ॥ २५ ॥ होहरा
 भीखमझेणाहि आदिदेन्पजुहेते यागोर । अर्जुनसोबोलतभएक री कोरवकि ओर ॥ २५ ॥ वोविमुण ॥ भीष्म मुख्यक
 रुनि ॥ एथीचेराजे मिळानि कोरवां मिळालेदुःखुना अर्जुनपाहेते ॥ २५ ॥ पद०टिका ॥ सर्वेषां ॥ सर्वही ॥ महास्थितां च ॥ रा
 जां पुढेंही ॥ भीष्म दोणप्रमुखतः ॥ भीष्मा चार्यदोणा चार्यसन्मुखवही ॥ हेपार्थ ॥ अगा अर्जुना ॥ समवेतान् ॥ मिळाले
 ऐसे ॥ इतान् ॥ कुरुन् ॥ हेकोरवजेयांतें ॥ पश्य ॥ पाहे ॥ इति याप्रकारं ॥ उवाच ॥ बोलताजाहला ॥ २५ ॥ ॥ ॥ आयी
 भीष्म दोणासन्निध सर्वनृपाच्यासमीपचिद्वयस्तु ॥ बालहेसपाथ अजिमिळालेपहाचसर्वकुरु ॥ २५ ॥ ॥

॥ भीष्म दोणप्रमुखतः ॥ सर्वेषां च महास्थितां ॥ उवाच पार्थपश्येतान्समवेतान्कुरुनिति ॥ २५ ॥

॥ तत्रापश्य हितान्मार्थः ॥ वित्तनथपितामहान् ॥ आचार्यान्मातुका तत्रात्तन्युत्रान्यौत्रान्सर्वं सथा ॥ २६ ॥

॥ श्लोक ॥ तोपार्थपाहेचुलते ॥ आजेजेत्यांतत्यांप्रति ॥ गुरुमामे आणिभाऊ ॥ पुत्रपौत्रतयासहि ॥ २६ ॥ हो ॥ अर्जुन
 वोदेखेसवेपितामहाभाई ॥ गुरुमामाकोयासर्वोस्ततनातिकेहाय ॥ २६ ॥ वोवि ॥ पार्थसकलही देखेपितृव्य
 पितामहविद्वाषें ॥ आचार्यत्वात्तपुत्रअनेक ॥ पुत्रसर्वे अवघेवि ॥ २६ ॥ पद०टिका ॥ पार्थः ॥ अर्जुनजोतो ॥ तत्रात्यार
 णभ्रमीच्याठार्शितान् ॥ गाहिले अशांतें ॥ अपश्यत् ॥ पाहताजाला ॥ कोणकोणातेंतरी ॥ वित्तन् ॥ चुलते जेत्यांतें ॥ अथ
 त्यानंतर ॥ पितामहान् ॥ भीष्मादिके आजेजेत्यांतें ॥ आचार्यान् ॥ दोणाचार्यादिकजेत्यांतें ॥ मातुकान् ॥ मामेजेत्यांतें ॥ कातन् ॥
 भाऊजेत्यांतें ॥ पुत्रान्यौत्रान् ॥ इर्याधनावेपुत्रपौत्रत्यांतेंही ॥ तथा ॥ तसेच ॥ सखीन् ॥ मित्रजेत्यांतेंही ॥ २६ ॥ आ३
 पाहेअर्जनितेथे भातुक आचार्यमित्रपौत्रातो ॥ त्यापितृपितामहाते बंधूतेआणिदृष्ट मित्राते ॥ २६ ॥ ॥

॥४०॥ सास्यां सोय यांते ही। यां हों हिं सेन्य सागरी। देखो नि पुत्र कौंती वा। बंधूते त्यार। यां गणि॥ २७॥ हो
हरा॥ सुरसुरहद बंधु सबे दो उसेनाके माह। तिन्हें देखक सुणा भई तब बोले नरनाह॥ २८॥ वो विमु॥ श्वशुरसो
यरे दो सेनि। बंधुवर्गीतें जाणो नि। लपाउ पजली मना। कौंतेय बोलों लगला॥ २९॥ पर० टिका॥ उभयोः सेनयो
रपि। दोन्ही सेना तु यात्यां ब्याग ई ही। श्वशुरान्। सम्मेजेत्यांते। सुहद श्वेव केले आहेत उपकार। यां स असेजेत्यांते।
ही पाह ताजाहला। सः कौंतेय तो कुंती सुतजो तो। अवस्थितान्। राहिले असे। तान्तस वर्वान्वं धन्। तेस वर्वही बंधुवजेत्यां
ते। समोह्य। पाहोन॥ ३०॥ ॥ आयो॥ देव श्वशुराते सहद तेवहा होन्। हिसैन्यहिं धूते। कुंतीचातो नंदन पाहुनियासि

॥ श्वशुरान्तहद श्वेव सेनयो रपि॥ तान्तस मीह्यस कौंतेय सर्वान्वं धन्यवस्थितान्॥ ३१॥
॥ हृषया परया विष्णुविष्णी दन्ति दम ब्रवीत्। अर्जुन वहद्वृ मंखजनं हस्तयुत्संसमुपस्थितं॥ ३२॥

धूसर्वं धूते॥ ३३॥

॥४१॥ लपेकरुनि आविष्ट। विषादें बोलिला असे॥ देखो नि लघास्वजन॥ युत्थाथरि सित्थजे उपसे॥ ३४॥ हो०॥
देखो मैसब बंधुय हळजुद के दाय। मो मुख सुरवतजात है अंग अंग सिथलाय॥ ३५॥ वो विमु॥ पाहे परम लपेक
रुन॥ विषाद पावले असेमन। युद्धकरु इत्थिस्वजन॥ श्री हळारेवा॥ ३६॥ पर० टिका॥ परया हृषया। परम हृषये
तीणे। आविष्टः। व्याप्तपार्थजो तो। विषी दन्॥ विषाद तेपावोन्॥ इदं वक्ष माणवचन जेत्याते। अब्रवीत्। बोल ताजाहला।
हेलष। अगापर ब्रह्मरूपा। युमुत्सुं युत्थकराया कारणे। समुपस्थितं। वरवेंरा हिले समुदाय असा। इमंखजनं हाजो आपलाजन
आ॥। मानुनि विषाद चित्ती बोले हो वो नियाहु पाया मा॥ हृष्णापाहुनित्याते जेयुधो सुत्सर्व॥ जो त्यांते। दृष्टा। पाहोन॥ ३७॥
ही जापा॥ ३८॥ ॥ ॥

(9)

मंगी-टि-च-

आ-
१

॥ श्लोक ॥ पिछति सर्व हीगात्रे । दुःखें मुखहि वाक्ते । शरारं कांपसुट्टो । अंगिरो मांचऊठति ॥ २८ ॥ दो० रोमहर्षहो
 तहै देहमो औरुकंपबद्धभाय । धनुरवगिरतमोहाततेतु चातपत अधिकाय ॥ २९ ॥ वोवि ॥ दुःखहो तसेगात्रां सिखु
 खशोषतेंहजा केशि कंपरोमांचअंगासि । अस्तिस्थितिजाहली ॥ २३ ॥ पद०टिका ॥ मममास्तिंगात्राणि करवरणा
 दिकजेते सारंति । विकलहोताहेत् । मुखं च मुखजेतेंही । परिश्रुष्टिकोमाइलेंजेतें । मेशारीरे मास्याशारीराच्चा
 गर्भ । वेपथुश्च कंपजोतोहोतो । रोमहर्षश्च । रोमांचजोतोही । जायते होतो ॥ २४ ॥ आया ॥ गात्रेखिन्नसमस्तेमुख
 शुष्कहि आणि सर्वतनुकंपा । पाहेरोमांचिततनुउपजलिचित्ताततीव अनुकंपा ॥ २५ ॥ ॥

॥ सीरंति ममगात्राणि मुखं च परिश्रुष्टिवेपथुश्च शरोरोमहर्षश्च जायते ॥ २६ ॥
 ॥ गंडीवंस्तं सतेहस्तात् कैवपरिद्यते । न च शक्रो म्यवस्थातुं प्रमती वचमेमनः ॥ २७ ॥

॥ श्लोक वा० हातापासनिगंडीव । गलतेजक्तेंलं च । उपाराहोंहिनशके । वाटेभोवतसे मन ॥ ३० ॥ दोहरा ॥ था
 उहोनेनहिसकेतस्त्रमतज्जुमोमनचिन्ना कैसेसगुणदेखभत कैसिहैयहरीता ॥ ३० ॥ वोविमु० ॥ धनुष्यपउहातीकु
 नि । त्वचाधुधुडिद्यालिकरुनि । मीशक्तनकें राहावयालागुनि । मनमा म्लंचमतसे ॥ ३० ॥ पद०टिका ॥ मेहस्तात्
 मास्मा हातापास्तन । गंडीवं । गंडीवधनुष्यजेतेंस्तंसते । निसरोनपउतें लक्खैव त्वचाजेतेही । परिद्यते चक्षुकेजक
 तें । अवस्थातुं राहावयाकारण । न च शक्रोमि । मीशक्तनकेंमेमनः । मास्तेमनजेतेंस्त्रमतीवचफ्रमतेंकाय असेंदिसतें ॥ ३० ॥
 आ ॥ हस्तापास्कनिगक्तेंगंडिवआलातन् सिहिवजाए । वैसायाद्वाक्तिनसेन्त्रमवीचित्तासमोहजंजाए ॥ ३० ॥

(१८)

॥श्लोकवा०॥ देखते॑ मि॒नि॒ मि॒ ने॑ हि॑ ॥ वि॒ परी॑ ते॑ चि॒ के॑ शा॑ वा॑ ॥ न कल्या॑णही॒ मो॒ दे॑ रे॑ वं॑ ॥ युद्धा॑ स्वजनमा॑ रुनि॑ ॥ ३१॥ दो०॥ सज्ज
नहन्योसंग्राममेतातिहृयोजुजान। अपनोभलोनदेखयहैंते॑ विपरीतसुजान॥३१॥ वोविमु०॥ आपले॑ स्वजनम्यामा
रुनि॑। मजसुखक्षवैंनुपजेमना॥ विपरीतचिन्हेंदिसतीनयनी॑ के॑ शवरायामज॥३१॥ पद०टिका॑ है॑ केशव। अगाकेशि
है॑ त्या॥ विपरीतानि॑। अनिष्टस्त्रैके॑ रेशि॑॥ निमित्तानि॑ च। अपश्चाकुनजेते॑। पश्यामि॑ पाहतो॑। आहवै॑ युद्धावेश्यां॑ स्वजनं॑
गोत्रजनजेत्यांते॑ हत्वा। मारून्। श्रेयः। कलजेते॑ न च अनुपश्यामि॑ नाहं॑ पाहत॥३१॥ ॥ आय॥। युधीविपरी
तासन्वपाहतसेकेशवानिमित्ताते॑। बधुनिस्वजनानरिसेभाते॑ कल्याणराज्यमंताते॑॥३१॥ ॥ ॥ ॥

॥ निमित्तानि॑ च पश्यामि॑ विपरीता॑ नि॑ केशव॥ न च श्रेयै॑ नुपश्यामि॑ हत्वा॑ स्वजनमा॑ हवै॑॥३१॥
॥ न कां॑ से॑ विजयं॑ हृष्णन॑ चराज्यं॑ सुखवा॑ नि॑ च॥ किनोराज्येनगोविंदकिं॑ कोगैज॑ वितेनवा॑॥३२॥

॥श्लोकवा०॥ न इछिं॑ जयहि॑ क्षमा॑ ॥ न च राज्य अथवा॑ सुख। राज्यभोगें॑ जी॑ वितें॑ हि॑। गोविंशकाम आमुते॑॥३२॥ दो०॥ चा
है॑ विजयनहृष्णन॑ हि॑ चाहतसुखराज्य। राज्यभोगगोविंदजू॑ औरुजी॑ वनहि॑ केकाज॥३२॥ वोविमु०॥ हृष्णाजयाविचा
उनाहं॑। राज्यसुखवाचीगोडीकाहिं॑। राज्यभोगसकळ ही॑। नलगेमजस्वामियां॥३२॥ पद०टिका॑ है॑ हृष्ण। अगाभक्तपापना
शक। विजयं॑ विजयजोत्याते॑। न कां॑ से॑ नाहं॑ इछितराज्यं॑। राज्यजेते॑ ही॑ नलगे॑। सुखवा॑ नि॑ च। सुखजेते॑ ही॑। न कां॑ से॑ नाहं॑ इछितहे॑ गो
विंद। अगाशद्गानगम्या॑। न आह्मासराज्येनराज्यजेते॑ करून्। किं॑ कायत्रयोजनभोगः। भोगजेते॑ ही॑ करून्। किं॑ कायजी॑ वितेनवा॑
आ॑॥। इछीनामीहृष्णगोविंदराज्यभोगविजयासी॑॥। न उगेस्वजनबधेमजजी॑ वितज्ञण॥। वां॑ वोनतरा॑ किं॑ काय॥३२॥
राज्यभोगविजयाशी॑॥३२॥ ॥

भगविच

९

॥ श्लोकवा ॥ राज्य ज्ञाग सुखे आस्ती । ज्यां निमित्य अपेक्षिते । टां कुनिप्राणधनते । उक्षेयुद्धांतराहति ॥३॥ हौ ॥ रा-
ज्य ज्ञाग सुख क्षम त्रुक्तरीयत इनके काज । लरतजीवधन छाँड़के हमनहिं बाहतराज ॥३॥ वो विमु ॥ ज्यां कारणं भो-
ग बद्धत । आपण हातों जि इछित । प्राणधन टां कुनिसमस्त । युद्ध आले सर्वही ॥३॥ पद० टिका । राज्यं राज्यपण जेते । ज्ञा-
ग । स्तग्वं दनादि ज्ञाग जेते । सुखवानि च । शशादि सुख जेते हा न । आह्नास । एषामर्थं । ज्यां सायन्यां कारणं कांक्षितं ।
अपेक्षित । इमे तेहे । युद्ध यागायं । प्राणात् । प्राण जेत्याते । धनानि च । इव जेत्याते । त्यत्का । टां कून् । अवस्थितान् ।
ज्ञावेन्यासादीराज्य सुखाभोगते चिह्निधनान् । शाले सिद्धमरायात्याहुनियाप्राणगेहमित्रधना ॥३॥ शाहिले आहेत् ॥३॥ ज्ञा ॥

॥ ये षामर्थं कांक्षित न्नो राज्यं ज्ञागः । सुखवानि च त इमेव क्षिति युद्धे प्राणां स्तपत्का धनानि च ॥३॥
॥ आचार्यः पितरः पुत्रास्तथैव वितामहाः मातुळाः श्वशुराः पौत्राः शालाः संबंधिनस्तथा ॥३॥

॥ श्लोकवा ॥ गुरुद्वाणादि भीष्मादि हे आजे चुलते सतत । नामेव श्वशुर नातुहे मे द्वाणसे घरे तसे ॥४॥ दोहरा ॥
आचार्यापुनिवितामह पुत्र वित्तु हे रव । नातिमातुवस्व श्वशुर और सारे हे अवरे रव ॥४॥ वो विमु ॥ पितर पुत्र पक्षी
चे । वडिल भीष्म आमुचे । द्वाण गुरु बोलि जेवावे । मामेमे द्वाण अवघेवि ॥४॥ पद० टिका । आचार्यः गुरुजेते
पितरः । चुलते जेते । पुत्राः । तनयजेते । तथैव वा तसेव । वितामहाः । आजेते ते । श्वशुराः । ससरेजेते । पौत्राः । नातों
उंजेते । शालाः । मे द्वाणजेते । तथाव । तसेव । संबंधिनः । शारीर संबंधी जेते ॥४॥ ॥ ॥ ॥ आर्य ॥
आचार्यज्ञाणिमातुर्क्षेत्रवितामह हि पुत्रही पितर । शालक आणिव वशुर हि संबंधी दृष्टमित्रज्ञापितर ॥४॥



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com